मानसश्री गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की 247667 (उ.ख.)
फोन : (01332) 274370
मोः 09760111555
E-mail:gopalraju12@yahoo.com

क्या है पदार्थ तंत्र

शनिवार को घर में पीपल का एक पत्ता रख लें, धन लाभ होने लगेगा। दक्षिणावृत्ति शंख में चावल तथा नागकेसर अभिमंत्रित करके भर लें, वैभव दिलवाने का भेद इस पदार्थ में छिपा है। नागकेसर नामक वनस्पती में लक्ष्मी जी को आकर्षित करने का गुण-धर्म छिपा है। खैर, बेल, सिरस आवला तथा अशोक आदि के वृक्षों में दुःखों का अंत करने की क्षमता विधि ने भर दी है। अशोक वृक्ष के सात पत्ते जो महिला अपने साथ रखती है, सौभाग्य सदैव उनके साथ रहता है। जंगली सुअर का दांत घर में स्थापित कर लेने से कैसी भी प्रेत बाधा अथवा ऐसी ही अन्य असामान्य बाधाओं से छुटकारा मिलने लगता है। कालसर्प दोष से यदि पीड़ित हैं तो शिवलिंग पर जल अर्पित कर के उनका स्पर्श कर लिया करें। शनि दोष से पीड़ित हैं तो काली वस्तुओं का दान कर लिया करें। मंगल दोष से पीड़ित हैं तो विवाह से पूर्व सात फेरे तुलसी, पीपल अथवा बरगद के

लगा लिया करें। घर में कैसी भी विपदा आई हो तो घर का चौका सिमट जाने के बाद नित्य वहाॅ छोटी सी चांदी की डिबिया में दो लौंग कपूर के साथ जला दिया करें। किसी बाबा, फ़कीर अथवा अन्य संत-महापुरुष आदि के द्वारा मिट्टी की एक चुटकी अथवा किसी सिद्ध घूने की एक चुटकी भभूत का सुप्रभाव किसी न किसी रुप में आपके जीवन में भी अवश्य आया होगा।

क्या है यह सब? अंधविश्वास? मात्र पारम्परिक रुप से चली आ रही आस्था, विश्वास, रुढ़ी आदि? अथवा इन सब के पीछे कोई ठोस वैज्ञानिक, विवेचनात्मक अथवा तार्किक पहलू भी छिपा है? पदार्थ तंत्र विषयक उपरोक्त अथवा उन जैसी अनेक सामग्री को लेकर जिज्ञासु मन संशय में अवश्य रहता है - माने कि न माने! सर्व प्रथम यह तथ्य स्वीकार कर लें कि इन सब का कुछ न कुछ शुभाशुभ फल है अवश्य। पृथ्वी का कण-कण परमसत्ता की पराशक्ति में बंधा हुआ है। इस बंधन में प्रकृति प्रदत्त एक लयबद्धता है, एक सामन्जस्य है अर्थात् सब कुछ एक-दूसरे का पूरक है। नियति भी इस लयबद्धता को सन्तुलन में लाने का अनवरत यत्न करती है। इन सब में व्यक्ति, देश काल आदि के अनुसार असन्तुलन बना नहीं कि समझिए आपदाओं, विपदाओं तथा अराजकता ने घेरना प्रारम्भ कर दिया।

विज्ञान इस अज्ञात पराशक्ति को तीन ऊजाओं के रुप में स्वीकार करता है - न्यूक्लियर फोर्स, मेग्निटिक फोर्स, कॉस्मिक फोर्स तथा परस्पर उनके अन्तर्गत हो रहे असन्तुलन का बलात् प्रयोगों द्वारा असन्तुलन में लाने पर विश्वास करता है। ब्रह्माण्ड में व्याप्त एक तारतम्य लयबद्धता का मूल है परमाणु तथा उनके भीतर समाए दूसरे सूक्ष्म और सूक्ष्मतर कण। यह तथ्य नवीनतम खोजों से कब का सिद्ध हो चुका है कि पदार्थ की रचना परमाणु से हुई है। परमाणु में इलेक्ट्रान, प्रोट्रान तथा न्यूट्रान कण हैं। क्वार्क का मूल आधार फरमिआन है। नवीनतम खोजों से एक अन्य कण बोसान की खोज हुई है

जो स्वयं संदेशवाहक है और संदेशवाहक के मध्य संदेश प्रसारित भी करता है। हो सकता है कि सबसे सूक्ष्म कण फरमीआन अथवा बोसान के अन्दर भी कुछ अन्य सूक्ष्मतर खोज निकाला जाए। परन्तु उस सब को देखने-परखने की पैनी दृष्टि का हमारे पास सर्वथा अभाव है। प्रोट्रान धनावेशित, इलेक्ट्रान ऋणावेशित तथा न्यूट्रान उदासीन होते हैं। प्रोट्रान तथा न्यूट्रान परमाणु केन्द्र में होते हैं तथा इलेक्ट्रान इसका चक्कर लगाते हैं। यह अनवरत क्रिया है। इस प्रकार परमाणु की गतिशीलता के सम्बंध में स्पष्ट हो जाता है कि संसार में जड़ कुछ भी नहीं है, सब चेतन ही चेतन है। जगत का मूल आधार यही चैतन्यता है। गोपाल राजू का पदार्थ तंत्र भी इसी चैतन्यता पर आधारित है। विज्ञान यह भी स्वीकारने लगा है कि पदार्थ को यदि शक्ति एवं विद्युत में परिवर्तित कर दिया जाए (तांत्रिक भाषा में इसे कहें कि प्राण प्रतिष्ठा द्वारा किसी पदार्थ को चैतन्य कर दिया जाए) तो वह अतिसूक्ष्म अवस्था में पहुँच जाता है। जगत का मूल तत्व विद्युत है। इसके प्रकम्पन शक्ति द्वारा ही सूक्ष्म तथा स्थूल पदार्थ का अनुभव होता है। वृक्ष, वनस्पति, विग्रह, यंत्र, रत्न, रंग, तंत्रादि के द्वारा वास्तव में किए जा रहे मानव कल्याण के सब उपक्रम वस्तुतः विद्युत शक्ति के ही कार्य हैं। जिसने इस शक्ति तत्व को जान लिया उसे समझिए पदार्थ तंत्र में महारत मिल गयी, किसी पदार्थ से वह ठीक उसी प्रकार अपने इष्ट कार्य सिद्ध करवा सकता है जैसे कि अलादीन के चिराग में बंद तथाकथित् जिन्न करता है।

सूक्ष्म कणों के मध्य अथवा कहें कि समस्त ब्रह्मण्ड में चार बल क्रियाशील हैं। गुरुत्व बल के अन्तर्गत बोसान शरीर एवं पृथ्वी के सूक्ष्मतम परमाणु के मध्य आकर्षण उत्पन्न करता है अथवा कहें कि एक-दूसरे को परस्पर आकर्षित करता है। इलैक्ट्रो मैग्नैटिक फोर्स में प्रोट्रान तथा स्ट्रांग फोर्स में फर्मीआन संदेशवाहक का कार्य करता है। अन्तिम बल है - वीक फोर्स जो रेडियो एक्टीविटी से सम्बन्धित है। वैज्ञानिकों ने मान

लिया है कि प्रत्येक घटक परस्पर निश्चित रुप से एक-दूसरे से सूत्र में जुड़े हुए हैं। परन्तु इस सूत्र का वास्तविक स्वरुप अभी तक अछूता है।

आज वैज्ञानिक पदार्थ तंत्र के अस्तित्व के बारे में सुनिश्चित हैं। राबर्ट जेस्ट्रो ने, 'गॉड एण्ड द एस्ट्रोनॉमर्स' में लिखा है कि मैं ईश्वर तथा उसकी सत्ता पर विश्वास नहीं करता था। लेकिन जब से अन्तरिक्ष की अदृश्य लीला मेरे नियमों-सिद्धांन्तों से परे होकर भी यथार्थ में दिखाई दी, उस बाज़ीगर सत्ता पर मुझे-सहज ही विश्वास होने लगा। आज मैं पूर्ण संतुष्ट तथा आश्वस्थ हूँ कि कोई नियामक सत्ता अवश्य विद्यमान है जिसके कारण ब्रह्माण्ड तथा उसका प्रत्येक घटक क्रियाशील है।

ऐसा एक नहीं है, विश्व के अनेकानेक वैज्ञानिक, बौद्धिक वर्ग आदि का भी मानना है कि जड़ कुछ भी नहीं है। सब कुछ चेतन है। परन्तु दुर्भाग्य यही है कि इस अचेतन चेतना की परामनोवैज्ञानिक क्षेत्र में अनुसंधान कर रही सस्थाओं ने अन्ततः निष्कर्ष निकाला है कि जड़-चेतन प्रत्येक पदार्थ में क्षमताएं उतनी ही नहीं है जितनी कि उन्हें देखने मात्र से परिलक्षित होती हैं। यह क्षमताएं उनसे अनन्त गुना अधिक है। परन्तु हमारा यह दुर्भाग्य ही है कि इस साकार, प्रयोगानुकूल कल्पना का हम अज्ञानतावश पूरा लाभ नहीं उठा पा रहे हैं।

यह कल्पनातीतातीत कल्पना साकार भी हो सकती है। हमें बस आवश्यकता है प्रकृति तथा उसके प्रत्येक घटक से सामन्जस्य बनाने की। परन्तु हमारा दुभार्ग्य है कि हमने प्रकृति को प्राकृतिक न छोड़कर अप्राकृतिक बना दिया है। वन-उपवन सब समाप्ति के कगार पर है। सबको आर.सी.सी. के जंगलों ने निगल लिया है। भैतिकवादी, मशीनीकरण तथा आधुनिकता को पकड़ लेने की हिरस और होड़ की इस आपाधापी में प्राकृतिक रुप से से सृजित हो रही ऊर्जा अर्थात् विद्युत (चीन में 'ची') अपना सन्तुलन खोती जा रही है। परिणाम सबके सामने हैं - हवस, हिंसा, हैवानियत, रोग-शोक,

ईर्ष्या-द्वेष तथा मानसिक संत्रास आदि। इन सबसे अधिक विकराल रुप लिया है दरिद्रता ने, भले ही वह मन अथवा सोच से गरीब हो अथवा भौतिक सुखों की हवस वाली भूख से।

हमारे चारों ओर खान-पान, सुख-वैभव तथा आनन्द बिखरा हुआ है। परन्तु अपने कर्मों से हम उस प्राकृतिक सुख को भोगने से वंचित हैं। यदि प्रभुप्रदत्त पदार्थ तंत्र के घटकों तथा उनमें निहित गुप्त और सुप्त गुणों को समझकर तदनुसार उनका उपयोग करें तब तो आनन्द ही आनन्द है।

मानसश्री गोपाल राजू (वैज्ञानिक)

(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.

ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र

30, सिविल लाईन्स

रूड़की 247667 (उ.ख.)

फोन : (01332) 274370

मोः 09760111555

E-mail:gopalraju12@yahoo.com